# चल्यो जुग जाए री सुध

चल्यो जुग जाए री सुध बिना।
सुध बिना सुध बिना सुध बिना,चल्यो जुग जाएरी सुध बिना।।
प्रले प्रकृती जब भई, तब पांचों चौदे पतन।
मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन।।
तब जीव को घर कहां रह्यो, कहां खसम वतन।
गुर सिष्य नाम बोहोतों धरे, पर ए सुध परी न किन।।
ऊपर तले माहें बाहेर, खोज्या कैयों जन।
नेहेचल न्यारा सबन से, ए ठौर न पाई किन।।
पंथ पैंडे सब चलहीं, कई दीन दरसन।
ना सुध आप ना पार की, ए सुध परी न किन।।
कौन सरूप है आतमा, परआतम कह्या क्यों भिन।
सुध ठौर ना सरूप की, ए संसे भान्यो न किन।।
महामत सो गुर पाइया, जो करसी साफ सबन।
देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं ना करी किन।।